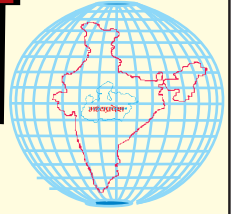




# बरली की दुनिया



बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान इन्दौर की मासिक समाचार पत्रिका

**“मानव जाति एक पक्षी के समान है, जिसके दो पंख हैं, एक पुरुष दूसरा स्त्री। जब तक दोनों पंख मजबूत न होंगे, एक सांझी शक्ति के द्वारा हिलाए न जाएंगे, तब तक पक्षी की आकाश में उड़ान असम्भव है।”**

वर्ष—5

अंक 53

जुलाई 2011

मूल्य: 5रु.

## नशाखोरी—एक अभिशाप

एक जमाना था, हमारे देश के सभी लोग दूध, दही, घी—मखन बहुत खाते थे। अब जहाँ भी देखो, ब्याह शादी हो या तीज त्यौहार, दुःख में हो या सुख में, काम धन्धा करने वाले

हों या बेकार, बहुत पढ़े लिखे हो या अनपढ़, हर उम्र के लोगों में नशा करने की एक आदत पड़ गई है। इस विषय में जब उनसे बात करो तो हर प्रकार के बहाने बनाते हैं। कोई कहता है कि क्या करें, बहुत मेहनत करके थक जाते हैं, इसलिए पीते हैं ताकि थकान उतर जाए। कुछ लोग कहते हैं, क्या करें ग़म दूर करने के लिए पीते हैं। कुछ कहते हैं कि वे संगत करने के

लिए पीते हैं। बहुत से लोग इस बात को स्वीकार करते हैं कि गलत लोगों की संगत में आकर नशे के शिकार हो गए हैं, वह तो नशा छोड़ना चाहते हैं लेकिन नशा उन्हें नहीं छोड़ता।

नशा इन्सान का शरीर, दिमाग, धन, दौलत, इज्जत सब कुछ डुबा देता है।

एक पुरानी कहावत है— “पहले आदमी शराब पीता है फिर



शराब शराब पीती है और अंत में शराब आदमी को पी जाती है।”

वास्तव में संयम से रहना अच्छे स्वास्थ्य की कुंजी है। जब हम स्वस्थ होंगे तो हमारा समाज भी स्वस्थ होगा। स्वस्थ इंसान वह है जो शरीर और मन दोनों से स्वस्थ हो। एक अध्ययन के अनुसार बीड़ी, तम्बाकू, सिगरेट, शराब व अन्य नशीले पदार्थों (दवाईयों) के सेवन से हर साल इतने लोग मर जाते हैं जितने कि

शेष सभी बीमारियों से भी नहीं मरते हैं।

आज शराब का सेवन हमारे परिवार और समाज की सबसे बड़ी समस्या है जिससे हजारों परिवार बर्बाद हो रहे हैं और इसका

सबसे बुरा असर महिलाओं व बच्चों पर पड़ता है। परिवार टूट जाते हैं और बच्चों को अच्छे संस्कार न मिलने के कारण बच्चें बाल अपराध में पड़ जाते हैं और नशा करने लगते हैं। हमारे आदिवासी समुदाय में ताड़ी, दारू, स्त्रा, बेर निमुडिया (एक प्रकार की दारू), महुआ के छिलके से बनी दारू, आदि का सेवन बड़ी मात्रा में बढ़ रहा है जो स्वास्थ्य और समाज सबके लिए एक बड़ी समस्या बन गया है। ज्यादातर लोग तनाव से मुक्ति का बहाना लेकर ही शराब व अन्य नशीली दवाइयों का सेवन करते हैं। किसी भी अवसर पर शराब पीना एक प्रतिष्ठा का विषय बन गया है।

बीड़ी, भांग, तम्बाकू, शराब, ताड़ी, सिगरेट, गुटखा, चरस के अतिरिक्त कई ऐसे नशीली चीजें हैं जो हमारे स्वास्थ्य पर बुरा असर डालती हैं जैसे—हशीश, गांजा, अफीम, स्मैक, ब्राउन शुगर, कोकीन आदि, सभी नशे में आते हैं। कोई भी नशा करते समय हम यह भूल जाते हैं कि हम अपने पैसे दे कर बीमारियाँ खरीद कर ला रहे हैं। हम ये देखते आ रहे हैं कि जिस किसी को नशे की लत लग जाती है वह अपने जीवन को बरबाद तो करता ही है लेकिन साथ में सारा परिवार, जमीन जायदाद सब को नशे में बरबाद कर देता है। हम इस बार बरली की दुनिया में आपको कुछ नशे की वस्तुओं तथा उससे होने वाली बीमारियों के बारे में जानकारी दे रहे हैं ताकि आप इसके बाद यह फैसला कर सके कि नशा छोड़ना ही अच्छा है या करना अच्छा है।

### **तम्बाकू खाने से बरबादी**

भारत में ही नहीं बहुत से देशों में हुक्का, चिलम या तम्बाकू कभी-कभी चबाने का एक खास रिवाज़ था। लेकिन अब लोग पूरे समय तम्बाकू खाते रहते हैं। उठते-बैठते, चलते-फिरते लोग इसे दवा समझ कर खाते-पीते हैं। कई लोग तम्बाकू जला कर मंजन करते हैं, बहुत से लोग इसे नास बनाकर सूँघते हैं। उन्हें ये पता नहीं होता है कि इन चीजों के खाने से कितना नुकसान होता है।

नशीली चीजे तम्बाकू, पान या गुटका खाने से दाँत, मसूड़े, गाल, जीभ, गला सड़ जाते हैं। यहाँ तक कि उससे मुँह का

कैंसर हो सकता है। साँस लेने में तकलीफ होती है। साँस की नली में सूजन आ जाती है। फेफड़े में बीमारी तथा शारीरिक कमजोरी के कारण लकवा हो सकता है। नशा करने वालों के बच्चों पर भी बुरा असर पड़ता है। बच्चें बड़े होने पर वो धीरे-धीरे अपने माता-पिता की तरह तम्बाकू खाना शुरू कर देते हैं।

अनुमान लगाया जाए तो हमारे देश में हर रोज 200 लोगों की मौत धूम्रपान करने वाले लोगों के छोड़े गए धुएँ के कारण होती है। बीड़ी, सिगरेट पीने वाले लोग अपने साथ-साथ अपने पास पड़ोस के लोगों को भी फेफड़े का कैंसर, दमा, दिल की बीमारियों के शिकार बना देते हैं। नशा करने वाले लोग सिर्फ अपने जीवन को ही खतरे में नहीं डालते बल्कि अपने साथ रहने वाले परिवारजनों, मित्रों और दूसरों के स्वास्थ्य और जीवन को भी खतरे में डालते हैं।

### **शराब पीने से बरबादी**

आज स्कूल, कोलेज में जाने वाले छात्र-छात्राएं, किसान, मजदूर, नौकरी-पेशा, व्यवसायी, बूढ़े सभी में नशे की लत बढ़ती जा रही है और पुरुषों के साथ-साथ अब महिलाएं भी शराब का सेवन अधिक मात्रा में कर रही हैं।

इस बदलते हुए परिवेश में हमारी संस्कृति के मूल्य खत्म होते जा रहे हैं जिससे हमारे समाज की पूरी आस्था (विश्वास) प्रभावित हो रही है।

गाँव में लोग अधिकतर ऐसा करते हैं कि दिन भर काम करेंगे और शाम को उसी पैसे का दारू पीकर घर आ जाते हैं। कभी-कभी घर का अनाज बेचकर भी दारू पी जाते हैं। पैसे नहीं होने पर उधार करके ही दारू पीते हैं और कहते हैं कि फसल आने पर पैसे दे देंगे। जब फसल आ जाती है, तो सारे पैसे लुटा देते हैं। औरतें यदि मजदूरी करने जाती हैं तो उससे भी पैसे, ज़ेवर, रकम, छुड़ाकर या बेच कर उन पैसों की दारू पी जाते हैं। हजारों रुपये के ज़ेवर आदमी दारू पीने के लिए चालीस रुपये में ही बेच देता है। बहुत से लोग तो यह सोचते भी नहीं की दारू पीने से क्या नुकसान होते हैं। बहुत से गाँवों में तो लोग कच्ची दारू सड़े हुए पानी में बनाते हैं जो मटके में

पानी की तरह भरी रहती है। उसे औरतों से लेकर बच्चे, बूढ़े, जवान सभी लोग ऐसे पीते हैं, जैसे कि पानी पी रहे हैं। उन्हें मालूम नहीं कि वो खुद को ही मौत के मुँह में ले जा रहे हैं। दारु पीकर लोग गन्दी हरकते करते हैं, चोरी करते हैं, और नशे की हालत में कभी-कभी किसी को जान से भी मार देते हैं।

### शराब का हमारे शरीर पर प्रभाव

शराब हमारे सोचने, समझने, अनुभव करने और शारीरिक संतुलन को बनाए रखने की क्षमता (ताकत) को प्रभावित (कम) करती है।

सोचने समझने का काम हमारे दिमाग का एक भाग (सेरिब्रम) और शरीर को संतुलन में रखने के लिए दिमाग का दूसरा भाग (सेरिबेल्लम) काम करता है अर्थात् शराब हमारे दिमाग के दोनों हिस्सों पर बुरा असर डालती है जिसके कारण हमारा शरीर और बुद्धि तथा विवेक धीरे-धीरे खत्म हो जाता है।

एक सर्वेक्षण के अनुसार शराब पीने वाले इंसान की उम्र उसकी सामान्य उम्र से 12 साल कम हों जाती है। अध्ययन बताते हैं कि सड़क दुर्घटनाओं का एक बड़ा कारण नशाखोरी है।

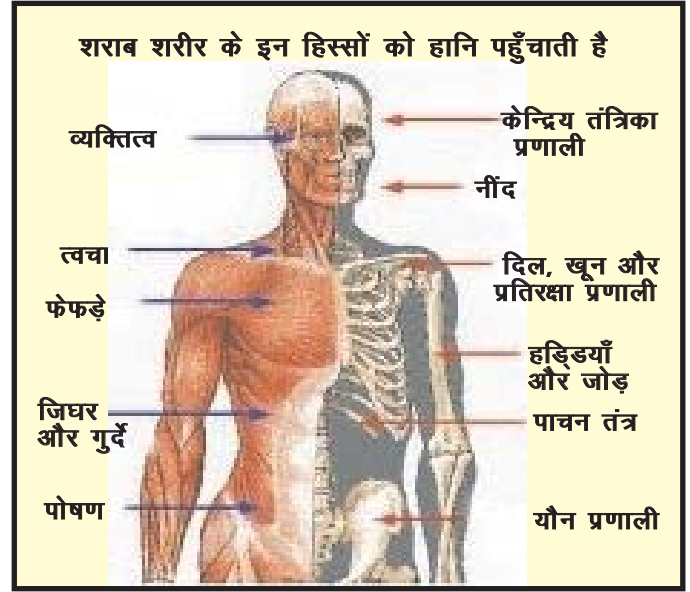
### शराब पीने के बुरे परिणाम

शराब पीने से खर्च बढ़ जाते हैं और घर में लड़ाई झगड़ा होना आम बात है जिसके कारण परिवार में अलगाव हो जाता है। इसके अलावा शराब पीने वाले इंसान पर भी इसका बुरा असर पड़ता है जैसे –

### शरीर पर पड़ने वाले बुरे प्रभाव

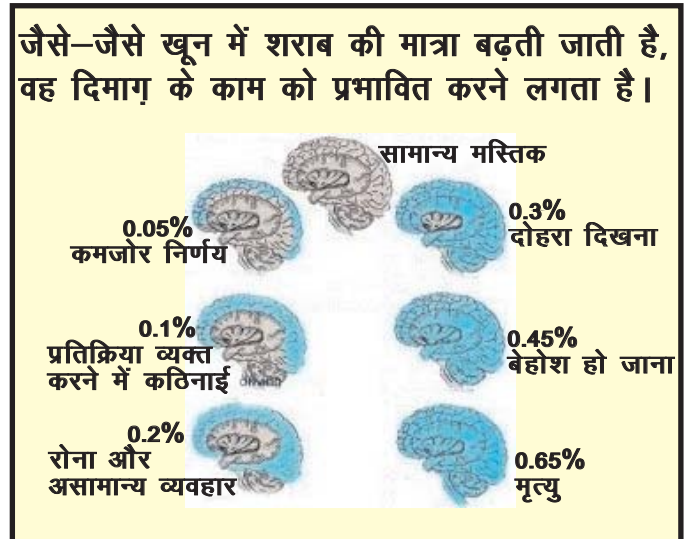
- ⇒ जिगर का खराब होना, जिसका अभी तक कोई सफल इलाज नहीं है
- ⇒ गुर्दे की बीमारी, दिल की बीमारी, अल्सर की बीमारी की सम्भावना अधिक होती है
- ⇒ अधिक पसीना आना, हाथ कांपना
- ⇒ भूख न लगना व नींद न आना
- ⇒ एच. आई. वी./ एड्स का खतरा
- ⇒ अधिक शराब पीने से इंसान का मोटापा बढ़ जाता है

जिसके कारण कई और बीमारियाँ होने की सम्भावना बढ़ जाती है



### मानसिक प्रभाव

- ⇒ शराबी इंसान को तनाव, डर, अवसाद व चिड़चिड़ापन रहता है
- ⇒ याददाश में कमी हो जाती है
- ⇒ हमेशा पिए रहने के कारण दुर्घटना हो सकती है, अधिक खुराक लेने से मृत्यु हो सकती है
- ⇒ पारिवारिक व सामाजिक संबंधों में अलगाव व झगड़ा
- ⇒ सोचने समझने की शक्ति खत्म हो जाती है
- ⇒ नैतिक पतन
- ⇒ आत्महत्या की बढ़ती प्रवृत्ति



## शराब व नशीली दवाओं का गर्भावस्था में बुरा प्रभाव

किसी भी तरह का नशा करना गर्भ में पल रहे बच्चे के लिए बहुत खतरनाक है जिसका बच्चे व माँ दोनों पर बुरा असर पड़ता है। जैसे— शराब या किसी भी प्रकार की नशीली चीजों के उपयोग से माँ के स्वास्थ्य पर असर पड़ता है। अगर कोई माँ शराब (ताड़ी, दारू आदि) या नशीली चीजों का सेवन करती है तो खून के रास्ते से नशीला पदार्थ माँ के शरीर से भ्रूण तक पहुँच जाता है। जिससे कई समस्याएँ हो सकती हैं जैसे —

⇒ समय से पहले बच्चे का जन्म होना

⇒ जन्म के समय बच्चे का वज़न कम होना

⇒ जन्म के समय बच्चे की मृत्यु की सम्भावना

जब कोई माता गर्भवस्था में बीड़ी, सिगरेट पीती है या तम्बाकू खाती है या नसवार बनाकर सूँघती है या तम्बाकू का मंजन करती है या दूसरे लोगों द्वारा छोड़े गए धुएँ से प्रभावित रहती है तो इसका बुरा प्रभाव जन्म लेने वाले बच्चे पर पड़ता है। लेकिन उन औरतों को पता नहीं चलता है कि नशे का नुकसान पेट में पल रहे बच्चे व खुद के स्वास्थ्य पर हो रहा है। यहाँ तक की उनकी खुद की भी जान जा सकती है।

## नशा करने वाले इंसान के साथ क्या करें?

नशा करने वाले इंसान के साथ

⇒ प्रेम से बात करे

⇒ उसे इलाज के लिये प्रोत्साहित करे

⇒ उसे किसी नशा मुक्ति केन्द्र, परामर्श केन्द्र, या अस्पताल में ले जाए।

## नशाखोरी से बचाव

नशीली दवाओं के जाल में अमीर, गरीब, पढ़े-लिखे, अनपढ़ सभी फंस सकते हैं। यदि माता-पिता अपने बच्चों पर ध्यान दे तो इस खतरनाक समस्या से शुरुआत में ही बचा जा सकता है।

नीचे कुछ लक्षण (पहचान) हैं जो यदि आपके बच्चे या परिवार

के किसी सदस्य की दिनचर्या (दिनभर) में दिखाई पड़ रहे हों तो आपको सावधान हो जाना चाहिए और नशा मुक्ति केन्द्र ले जाकर उसका सही इलाज करवाना चाहिए।

⇒ देर से घर आना

⇒ नए नए दोस्तों के साथ रहना व मिलना

⇒ जेब खर्च बढ़ जाना

⇒ बेचैनी और नींद न आना

⇒ आँखों की चमक कम होना

⇒ नज़रे ना मिलाना और परिवार के लोगों से दूर-दूर रहना

⇒ उंगलियों के पोरों पर जले का निशान होना

⇒ बाहों पर सुई का निशान दिखाई देना

⇒ नशीली दवा न मिलने पर आंख से पानी बहना।

⇒ शरीर में दर्द और थकावट

⇒ अपनी सफाई पर ध्यान ना देना

⇒ घरेलू सामानों का एक एक करके गायब होना

⇒ मिठाई के प्रति आकर्षण बढ़ना (अधिक मात्रा में मिठाई खाना)

⇒ रात में उठ कर सिगरेट पीना

⇒ शौचालय में देर तक रहना

⇒ कपड़ों में जले हुए सिगरेट के छेद दिखाई देना

⇒ बात कह कर जल्दी से भूल जाना, गुमराह करना, झूठ बोलना

⇒ बिना बात गुस्सा आना व चिड़चिड़ापन

⇒ यह ना मानना कि उसे नशे की आदत है

⇒ उल्टियाँ होना, ख़ाँसी का दौरा पड़ना

⇒ आँखों में लाली, सूजन, सुस्ती व नींद में रहना

⇒ लड़खड़ा कर चलना व बोलना

⇒ शरीर से विशेष प्रकार की बदबू आना

⇒ अचानक स्वास्थ्य में गिरावट, भूख ना लगना

⇒ घर में या आस पास में सिगरेट व सीरिज का पाया जाना

## नशीली दवाओं पर क़ानूनी रोक

गैर क़ानूनी नशीली दवाओं (पदार्थों) का खरीदना, बेचना व अपने पास रखना क़ानूनी अपराध हैं। यदि किसी इंसान के

पास नशीली दवाएं व्यक्तिगत उपयोग के लिए मिलती है तो उसे 6 माह से एक वर्ष तक की सजा और जुर्माना हो सकता है।

### शराब कैसे छोड़ना

किसी इंसान को यदि कैंसर हो जाए और डॉक्टर उससे कहे कि तुम्हारा जीवन ओर दस दिन का है तो उस समय वह क्या करेगा। कोई आपसे कहे कि आप आगे मत जाना, बहुत बड़ा गड्डा है, तो फिर भी क्या आप उस गड्डे में कूद जाएंगे या फिर उस गड्डे से बच कर निकल जाएंगे। कोई कहे कि यहाँ बहुत बड़ा जहरीला साँप है तो आप फिर भी क्या उसके पास जाएँगे या बचने की कोशिश करेंगे। अगर आपको डॉक्टर ने बोल दिया कि आज के बाद आपको शराब नहीं पीना है, नहीं तो आप की बीमारी बढ़ जाएगी फिर तो आपको कोशिश करना ही पड़ेगी कि आज के बाद शराब नहीं पीएं। जितने पैसे हम शराब पीने में उड़ाते हैं उन्हीं पैसों से घर में दूध, दही, घी, अच्छी हरी साग सब्जी लाकर खाना चाहिए। अगर शराब के बदले हम ये सारी चीजों का उपयोग करेंगे तो बीमारी अपने आप दूर भाग जायेगी और हम हमेशा खुश रहेंगे। हमारा पूरा परिवार खुश रहेगा। बेहतर है कि आप पीए नहीं, यदि पी रहें हैं तो एकदम पक्का मन करके छोड़ देवे।

हर युग में सन्तों, महापुरुषों और सभी ईश्वरीय अवतारों ने इन्सान को उन सभी चीजों से दूर रहने को कहा है जो इन्सान के जीवन को बरबाद करती है।

बहाई पवित्र लेखों में कहा गया है कि "नशीले पेय मन को इतना विषाक्त (जहरीला) बना देते हैं कि नशा करने पर लोग अपने मानव पद को भूल जाते हैं और पाशविक स्तर तक गिर जाते हैं।" इसका मतलब यह है कि नशा इंसान को हैवान बना देता है। नशे में इंसान सूझ-बूझ खोकर रिश्ते-नाते सब कुछ भूलकर जानवर बन जाता है।

अब आप गहराई से विचार कीजिए, यह सब जान लेने के बाद आप नशे को अपने गाँव और समाज से कैसे खत्म करेंगे और अपने परिवार में उनकी मदद कैसे करेंगे जो इससे दुःखी है और छोड़ना चाहते हैं या छुड़वाना चाहते हैं।

### संस्थान के समाचार

9 जुलाई 2011 को बहाई पावन दिन पर संस्थान परिसर में



सभी प्रशिक्षणार्थियों तथा स्वयं सेवकों ने वृक्षारोपण किया।

### विश्व जनसंख्या दिवस पर बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान में कार्यक्रम

विश्व जनसंख्या दिवस के अवसर पर बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान में 11 जुलाई 2011 को बढ़ती हुई जनसंख्या और उससे जुड़ी समस्याओं पर एक प्रस्तुति दी गई। यह प्रस्तुति क्रोएशिया की सुश्री आना माकुर्लिन ने दी। सुश्री आना माकुर्लिन उपसला विश्वविद्यालय, स्वीडन से अंतर्राष्ट्रीय मानवसेवा में स्नातकत्ता कर रही है। उनकी प्रस्तुति में सुश्री



आस्था अग्रवाल, जी.बी. पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान इलाहबाद, ने सहयोग दिया।

कार्यक्रम की शुरुआत संस्थान की निदेशिका श्रीमती ताहेरा

जाधव के उद्बोधन से हुई। उन्होंने बताया कि किस प्रकार बढ़ती हुई जनसंख्या को रोकने के लिए महिलाओं को अपना योगदान देना चाहिए और अपनी जिम्मेदारी को गंभीरता से लेना चाहिए।

सुश्री आस्था और सुश्री आना ने मुख्य रूप से चार बिन्दुओं पर चर्चा की— बढ़ती हुई जनसंख्या से पानी, भोजन की कमी, वनों का नाश तथा प्राकृतिक संसाधनों का हनन। स्वास्थ्य की समस्या, बाल विवाह, परिवार में छोटे बच्चों की देखभाल के लिए या खेत में काम करने के लिए स्कूल में न भेजना आदि। उन्होंने छोटे परिवार के फायदे, छोटे परिवार हेतु महिलाओं में जागरूकता, गर्भ निरोधक उपाय तथा इस ज्ञान को अपने समुदाय और गाँव में दूसरों को बताने तथा स्वयं इसका पालन करने पर बल दिया ताकि महिलाएँ सामाजिक परिवर्तन के साधन बन सकें।

कार्यक्रम के अंत में संस्थान के मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री योगेश जाधव ने संयुक्त राष्ट्र द्वारा विश्व जनसंख्या दिवस के इस वर्ष के विषय "विश्व की ज्वलंत समस्याओं की ओर ध्यान" पर आधारित चल चित्र दिखाया।

कार्यक्रम में मध्य प्रदेश के आलीराजपुर, खरगोन, धार, खण्डवा, बड़वानी, इंदौर तथा महाराष्ट्र के जलगाँव जिले की



41 गाँवों की 93 गामीण एवं आदिवासी महिलाओं ने पहली बार अपने जीवन में विश्व जनसंख्या दिवस में भाग लिया।

### संस्थान देखने आए मेहमान

16 जुलाई 2011 को हेल्पिंग हेंड्स नामक संस्था में काम कर

रहे युवा संस्थान की गतिविधियों को देखने के लिए आये।



श्रीमती ताहिरा जाधव ने उनका स्वागत किया और श्री योगेश जाधव ने उन्हें संस्थान दिखाया। संस्थान की गतिविधियों को देखकर वे बहुत प्रभावित हुए।

### सेवा के अनुभव



⇒ श्री गोविंद वल्लभ पन्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, उत्तरप्रदेश में ग्रामीण प्रबंधन की पढ़ाई कर रही सुश्री नेहा घोष, सुश्री स्वाति महेन्द्र, सुश्री आस्था अग्रवाल और सुश्री शालिनी गुप्ता ने बरली संस्थान में एक महीने की

इन्टरशिप पूरी की। संस्थान के बारे में अपने अनुभव उन्होंने इस प्रकार प्रकट किए "हमने यहाँ बहुत कुछ सीखा जैसे



जैविक खेती, सौर ऊर्जा का उपयोग, पानी का पुनःउपयोग आदि। यह एक बहुत आनंददायक अनुभव था।

ताहिरा दीदी, योगेश जीजाजी और पूरे बरली संस्थान को



बहुत बहुत धन्यवाद।”

⇒अमेरिका के दिपाव विश्वविद्यालय से मानव अधिकार की पढ़ाई कर रही सुश्री रिका बनर्जी ने डेढ़ महीने तक संस्थान में अपनी



सेवा दी। सुश्री रिका बनर्जी ने लिखा “यह एक बहुत संतोषजनक और हिला देने वाला अनुभव था। मुझे प्रशिक्षणार्थियों के साथ रहना बहुत अच्छा लगा। काश हर एक को और जानने का समय होता! मैं भविष्य में यहाँ फिर जरूर आऊँगी।”

⇒उत्तरप्रदेश से आई सुश्री जैनब खातून ने संस्थान में तीन महीने की सेवा दी। इन तीन महीनों को बहुत यादगार बताते हुए उन्होंने कहा “यह अनुभव कितना प्रेरणादायक था। मैं इसे कभी नहीं भुला पाऊँगी। मैंने यहाँ बहुत कुछ सीखा।”



### नेशनल ओपन स्कूल के परिणाम

हम आपको सूचित कर रहे हैं कि मई 2011 में 100 वें प्रशिक्षण की प्रशिक्षणार्थियों द्वारा दी गई नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग की कटाई और सिलाई के परिणाम आ गए हैं। जो प्रशिक्षणार्थी परीक्षा में पास हो गए हैं उनके परिणाम नीचे दिए गए हैं।

क्र.	नाम	परिणाम
1.	कु. नहजु किराड	पास
2.	कु. रानू डावर	पास
3.	कु. संगीता खरत	पास
4.	कु. रिंकु जमरा	पास
5.	कु. किरण निंगवाल	पास
6.	कु. मनी भयड़िया	पास
7.	कु. जानू चौहान	पास
8.	कु. बसु जमरा	पास
9.	कु. रिना चौहान	पास
10.	कु. थावली अखाड़े	पास
11.	कु. रेखा केवट	पास
12.	कु. रैना डावर	पास
13.	कु. राधा डावर	पास
14.	कु. साहबाई सोलंकी	पास
15.	कु. ममता किराड़े	पास
16.	कु. भुरी किराड़े	पास
17.	कु. अनिता डावर	पास
18.	कु. सोनु जमरा	पास
19.	कु. साधना निंगवाल	पास
20.	कु. ममता सस्तिया	पास
21.	कु. पानु डुडवे	पास
22.	कु. सुनिता कनोजे	पास
23.	कु. सोनु कनोजे	पास
24.	कु. टिंकु जमरा	पास
25.	कु. रेखा जमरा	पास
26.	कु. नीता जमरा	पास
27.	कु. सेवन्ती जमरे	पास

## भिलाली गीत

### आमेरा वो गाँव मां दारू घोणा पीये

आमेरा वो गाँव मां दारू घोणा पीये ।  
दारू बी पीये ने दाणा बी वेचे ।  
दाणा बी बेचे ने खेते बी वेचे ।  
आमेरा वो गाँव मां दारू घोणा पीये.

दारू बी पीये ने लाड़ी काजे तुके  
लाड़ी काजे तुके ने पुरिया बी रोड़े ।  
दारू बी पीए ने ताड़ी बी पीए ।  
आमेरा वो गाँव मां दारू घोणा पीये.

बीड़ी बी पीये ने भाँगे बी खाए ती  
कैंसोरने दुखेणो बी होए ।  
इना दुखेणा कोदो मानसे मोरी बी जाए ने  
पुरिया बी रोड़े, घोर बी बोरबादे होये ।  
आमेरा वो गाँव मां दारू घोणा पीये.

गाँव वाला काजें इनी सुब नोशियान चीजो काजे  
खाणों—पीणों छुड़णों पोड़से ।  
आमेरा वो गाँव मां दारू घोणा पीये.

**रचनाकार / गायिका: कुसुम, सायका, बायसा**

**प्रिंटेड मैटर—बुक पोस्ट**  
**पता**

---

---

---

---

---

## हिन्दी अनुवाद

### हमारे गाँव मे बहुत दारू पीते हैं

हमारे गाँव में दारू बहुत पीते हैं ।  
दारू भी पीते और अनाज भी बेचते हैं,  
अनाज भी बेचते है और खेत भी बेचते हैं ।  
हमारे गाँव में दारू बहुत पीते हैं.

शराब पीते है फिर पत्नी को मारते हैं,  
पत्नी को मारते हैं तो बच्चे भी रोते हैं ।  
दारू—ताड़ी भी पीते है ।  
हमारे गाँव में दारू बहुत पीते है.

बीड़ी पीते है तम्बाकू खाते है  
और कैंसर होता है  
इस बीमारी से लोग मर भी जाते है  
और बच्चे भी रोते हैं, घर भी बरबाद हो जाते है ।  
हमारे गाँव में दारू बहुत पीते है.

गाँव वालों को इन सभी नशीली चीजों को  
खाना—पीना छोड़ना पड़ेगा ।  
हमारे गाँव में दारू बहुत पीते है.

बरली की दुनिया ऑनलाईन भी है। इसके पहले वाले अंक [www.barli.org](http://www.barli.org) के our publications में देख सकते हैं।

इस पत्रिका के प्रकाशन में सहयोगी  
श्रीमती ताहेरा जाधव, श्रीमती डेडी बागदरे

### हमें पत्र लिखें

“बरली की दुनिया” के पाठकों से विनम्र निवेदन है कि आप हमें नीचे लिखे पते पर पत्र लिखें कि आपको नियमित “बरली की दुनिया” मिल रही है या नहीं।

### संपादक “बरली की दुनिया”

बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान  
180 भमोरी, न्यू देवास रोड, इंदौर 452010 (म.प्र.) फोन न. 0731-2554066